चौपाई

लक्षण :—

यह एक सममात्रिक छन्द है। इसमें चार चरण होते हैं। प्रत्येक चरण में 16-16 मात्राएँ होती हैं। अन्त में दो गुरु होते हैं।

उदाहरण :—

मंगल भवन अमंगल हारी।
द्रवहु सु दसरथ अजिर बिहारी॥

or

जब - जब होहि धरम कै हानी।
।। ।। ऽ। ।।। ऽ ऽ ऽ

बाढ़हि असुर अधम अभिमानी॥
ऽ ।। ।।। ।।। ।। ऽऽ

तब - तब प्रभु धरि विविध सरीरा।
ऽ।। ।। ऽ। ।। ।।। ।ऽऽ

हरहिं कृपानिधि सज्जन पीरा॥
।।। ऽ।। ऽ ।। ऽऽ

Gyansindhu Coaching Classes
By -Arunesh Sir

दोहा

लक्षण —

यह अर्द्धसम मात्रिक छन्द है। इसमें चार चरण होते हैं, इसके पहले व तीसरे चरण में 13-13 मात्राएँ होती हैं तथा दूसरे व चौथे चरण में 11-11 मात्राएँ होती हैं। सम चरणों के अन्त में गुरु और लघु होना चाहिए।

Example: —

सतगुरु हम सूँ रीझि कर,
| | | | | | S   S | | |

कह्या एक प्रसंग।
| S   S | S S |

बरस्या बादल प्रेम का
| | S   S | | S | S

भीजि गया सब अंग॥
S | | S | | S |

ज्ञानसिन्धु कोचिंग क्लासेज
अनुशासनेन विद्या अभ्यासेन विद्या
ज्ञानात् मुक्तिः
॥ ज्ञानम् मनुष्यस्य तृतीय नेत्रम् ॥

सोरठा

लक्षण —

यह दोहे के उल्टा होता है। यह भी एक अर्द्धसम मात्रिक छन्द है। चार चरण होते हैं, इसके पहले और तीसरे चरण में 11-11 मात्राएँ होती हैं तथा दूसरे और चौथे चरण में 13-13 मात्राएँ होती हैं। पहले और तीसरे चरण के अन्त में लघु गुरु होते हैं।

उदाहरण —

बंदहु गुरु पद कंज,
S I I   I I   I I   S I
कृपा सिंधु नर रूप हरि।
I S   S I   I I   S I   I I
महा मोह तम पुंज,
I S   S I   I I   S I
जासु बचन रविकर निकर॥
S I   I I I   I I I I   I I I

कुण्डलिया

लक्षण —

यह एक विषम मात्रिक छन्द है। इसमें छह चरण होते हैं। प्रत्येक चरण में 24-24 मात्राएँ होती हैं। आदि में एक दोहा और अन्त में एक रोला जोड़कर कुण्डलिया छन्द बनता है। जिस शब्द से इसका प्रारम्भ होता है उसी से अन्त होता है। दोहे का जो चौथा चरण होता है, वही रोला का प्रथम चरण बनता है।

उदाहरण —

रहिये लटपट काटि दिन, बरु घामहि में सोय।
छाँह न वाकी बैठिए, जो तरु पतरो होय॥
जो तरु पतरो होय, एक दिन धोखा देहै।
जा दिन चलै बयारि टूटि वा जर ते जैहै।
कह गिरिधर कविराय छह मोटे की गहिये,
पाता सब झरि जाँय तऊ छाया में रहिए॥

By-Arunesh Sir